गायत्री तत्व-विवेचन

विषय: गायत्री का चतुर्थ पाद (परोरारजा चरण) गृहस्थ के लिए नहीं है।

परमतत्व अलिंग, उभयलिंग, पुरुष, प्रकृति अथवा सब होकर भी सबसे अतीत हो सकता है। अलिंग शब्द से यहाँ समझना चाहिए कि उसमें न पुरुषभाव है न प्रकृतिभाव है। इसको कूटस्थ ब्रह्मसत्ता मान सकते हो। यह सच्चिदानंद स्वरूप इसमें संदेह नहीं। परन्तु इस अवस्था में शक्ति की अभिव्यक्ति नहीं रहती है अर्थात् जिस प्रकार व्यक्ति के द्वारा शक्ति का विलास हो सकता है, वह नहीं रहती किन्तु सामान्य अभिव्यक्ति रह सकती है, नहीं तो इस अवस्था को स्वप्रकाश-चैतन्य रूप से ग्रहण नहीं किया जा सकता। अवश्य इस सामान्य अभिव्यक्ति की भी मात्रा है। मात्रा की न्यूनता होने पर आनंद का ह्रास होता है। यहाँ तक कि चिद्भाव का भी ह्रास हो सकता है। अंत में केवल सत्तारूपी ब्रह्म रह जाता है। इस अवस्था को एक दृष्टि से सुषुप्तिदशा के अनुरूप मानना पड़ेगा, परन्तु एक ऐसी अवस्था भी है।

ब्रह्म सच्चिदानंद नहीं है, यह बात नहीं। यह जीव की योग्यता के अनुरूप ब्रह्म उपलब्धि का रहस्य है। अतएव अलिंग अवस्था भी विभिन्न प्रकार की हो सकती है। ब्रह्म की एकलिंग अवस्था है, यह परमपुरुष रूप से हो सकती है या परमाप्रकृति रूप से। जो लोग परमपुरुष के उपासक हैं वे परमपुरुषरूपी ब्रह्म को प्राप्त होते हैं। प्रकृति इस पुरुष में लीन रहती है, अथवा लीन न रहने पर भी आपेक्षिक दुर्बलता के कारण आश्रितभाव से वर्तमान रहती है। यह सब उपासक, युगल के उपासक नहीं हैं। मनुष्य की गति इस स्थल में एकलिंग ब्रह्मस्वरूप में है, ऐसा समझना चाहिए। जो लोग परमाप्रकृति के उपासक हैं, वे भी एकलिंग ब्रह्म को ही प्राप्त होते हैं, किन्तु ये भी युगल सेवक नहीं है।

उभयलिंग ब्रह्म एक ही समय में पिता और माता, पुरुषोत्तम और परमाप्रकृति दोनों ही है, वह अलिंग नहीं है, एकलिंग भी नहीं है, उभयलिंग है। युगलोपासक इस उभय-लिंग ब्रह्म को ही प्राप्त होते हैं। उसमें पुरुष-प्रकृति दोनों भाव हैं, फिर भी दोनों में विरोध नहीं है। इस पुरुषभाव और प्रकृतिभाव में वैषम्य नहीं

है। दोनों ही तुल्यबल हैं। शिव छोड़कर शक्ति और शक्ति छोड़कर शिव अलीक हैं। दोनों में अविनाभाव-संबंध है। अग्नि और दाहिकाशक्ति जैसे अपृथक् सिद्ध है, ब्रह्म का यह लिंग भी इसी प्रकार है। एकलिंग और उभयलिंग दोनों ही सलिंग-ब्रह्म हैं। उसको छोड़कर अलिंग ब्रह्म भी है। जब यह अलिंग और सलिंग ब्रह्म का भेद रहते हुए भी नहीं रहेगा अथवा एक निर्विशेष अवस्था में भी उभयलिंग और एकलिंग प्रतिभासपूर्ण रूप से उपलब्ध होगा तभी, परिपूर्ण ब्रह्म वस्तुतः अनुभव हो रहा है, ऐसा कहा जा सकता है। उस अवस्था में भोग और त्याग, गार्हस्थ्य और संन्यास एकार्थबोधक हो जाता है। इस स्थिति में शिवशक्ति दो शब्दों का पृथक् अर्थ नहीं रहता।

गायत्री के तुरीयपाद के प्रभाव से अलिंग स्थिति होती है। यही साधारण नियम है। यह निर्वाण या कैवल्यवत् अवस्था है। सामान्यतया संन्यास के प्रभाव से इस अवस्था की ही उपलब्धि होती है। इस दशा में स्वरूप के भीतर स्थिति होने पर भी स्वरूपशक्ति का उल्लास नहीं रहता। यह निष्क्रिय, शांत, अचल परमावस्था है। जब तुरीयपाद, पादत्रय का परिहार करके अकेला होकर आत्मप्रकाश करता है, यह उस समय की बात है। परन्तु जब उसको तुरीयपाद पूर्ववर्ती तीन पाद को त्याग

किये बिना अपने गर्भ में अंतर्भुक्त कर लेता है, तब उपासक की गति भिन्न हो जायगी। उस समय परिपूर्ण ब्रह्म की प्राप्ति होगी, अलिंगब्रह्म की नहीं। त्रिपादरहित तुरीयपाद और त्रिपादसहित तुरीयपाद दोनों के प्रभाव से जिस प्रकार की ब्रह्मानुभूति होती है, वह पृथक् है। पहली अनुभूति में जगत् मिथ्यारूप से प्रतिभात होता है। अनुभूति की पराकाष्ठा में जगत् का बोध नहीं रहता। फिर भी व्यापक ब्रह्मसत्ता का बोध निरवच्छिन्न भाव से वर्तमान रहता है। दूसरी अनुभूति में जगत् सत्यरूप से प्रतीत होता है। यह ब्रह्मसत्ता की ही, आत्मविलासरूप से अनुभूति होती है। शुद्धज्ञान छोड़कर इस प्रकार के विलास का अनुभव हो नहीं सकता क्योंकि उसके मूल में अज्ञान का प्रभाव नहीं है।

अर्थात् एक, नाना, एक और नाना-ये तीन प्रकार की अनुभूतियाँ हैं। एक है, नाना नहीं है-यह अलिंग ब्रह्मानुभूति है। इस समय नाना का प्रतिभास रहने पर भी उसका सत्यता- बोध बाधित है। प्रारब्ध के अनन्त में देहपात के अनंतर यह मिथ्या प्रतिभास भी नहीं रहेगा। नाना है एक नहीं है, यह ब्रह्मानुभूति नहीं विषयानुभूति मात्र है, उसका विषय आलोच्य नहीं है।

एक है नाना भी है-यही अलिंग और सलिंग का युगपत् अनुभव है। इस अनुभूति के बहुत प्रकार-भेद हैं। एक प्रधान अंगी, नाना

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

गौण अंग अर्थात् एक में आश्रित । नाना प्रधान एक उसका अंग अथवा एक और नाना दोनों ही तुल्यबल हैं, बराबर हैं। और एक तथा नाना अखंड हैं, दोनों एक ही हैं-यह अभिन्न अनुभूति है। शब्दमात्र में द्वैत है, वस्तु में नहीं है।